ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 56-59

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

आर्य समाज के विभिन्न शिक्षण संस्थान

अखिलेश प्रताप सिंह

शोध अध्येता– प्रोफेसर छत्रसाल सिंह, शिक्षासंकाय, उ0प्र0 राजर्षि मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ0प्र0) भारत

Received-10.07.2022, Revised-16.07.2022, Accepted-22.07.2022 E-mail: akhileshpratapsingh753@gmail.com

सारांशः – ***महर्षि दयानंद सरस्वती ने तत्कालीन शिक्षा पद्धति का विश्लेषण कर पाया कि भारतीय अपने मूल शैक्षिक सिद्धांतों व विषयवस्तु तथा शिक्षण विधि से काफी दूर हो चुके थे। सांस्कृतिक संक्रमण के फलस्वरुप शिक्षा प्राप्ति का मूलउद्देश्य भौतिक जीवन की समृद्धि एवं जीविकोपार्जन ही रह गया था। नए ढंग के इन स्कूलों व कॉलेजों में भारत की सांस्कृतिक परंपरा की सर्वथा उपेक्षा की जाती थी।***

अतः महर्षि की मान्यता थी कि भारत की शिक्षा विषयक आवश्यकताएं एक ऐसी शिक्षा पद्धति से पूरी हो सकती है, जिसमें नए ज्ञान–विज्ञान को भी समुचित स्थान प्राप्त हो और साथ ही भारतीय संस्कृत के प्रति विद्यार्थियों की आस्था भी कायम रहे। अपने देश के साहित्य, कला, भाषा एवं परंपराओं से पूर्ण परिचय के साथ–साथ आधुनिक युग की उपलब्धियों तथा प्रवृत्तियों की जानकारी भी जिस पद्धति से प्राप्त हो सके, वही भारत की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकती है।

शिक्षा विषयक अपने विचारों का निरूपण करते हुए दयानंदजी ने वैदिक शिक्षा पद्धति को समाज के सामने रख कर उसे क्रियान्वित करने के उद्देश्य से आर्यसमाज द्वारा बहुत–सी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। यह शिक्षण संस्थाएं एक सदृश नहीं है, इनकी व्यवस्था, पाठ विधि तथा स्वरूप में बहुत अंतर है। इन विभिन्न प्रकार की आर्य शिक्षण संस्थाओं को विभिन्न वर्गों में विभक्तकर अध्ययन करना साध्य होगा।

कुंजीभूत शब्द– शिक्षण विधी, सांस्कृतिक संक्रमण, भौतिक जीवन, जीविकोपार्जन, सांस्कृतिक परंपरा, विभक्तकर अध्ययन।

1. गुरुकुल–महर्षि ने जन शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की थी, उनके लिए उन्होंने गुरुकुल शब्द का प्रयोग नहीं किया। सन् 1892–93 में आर्यसमाज दो भागों में विभाजित हो गया। उनमें से एक दल ने पाश्चात्य शिक्षा का समर्थन किया, जिन में लाला हंसराज तथा लाला लाजपत राय प्रमुख थे तथा दूसरे दल में पाश्चात्य शिक्षा का विरोध किया गया और इसके प्रमुख स्वामी श्रद्धानंद ने 1902 में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की।[1]

इन आर्य गुरुकुल के पाठ्यक्रम में वेदों के व्याकरण, अष्टाध्यायी, महाभाष्य व निरुक्त का अध्ययन सम्मिलित था। इन ग्रंथों का अध्ययन आर्यसमाज के देशभर में चलने वाले 200 से अधिक गुरुकुल में कराया जाता है। जिनमें से ज्वालापुर, देहरादून, मेरठ, झज्जर, लुधियाना, सुंदरगढ़ के गुरुकुल विषेश रूप से उल्लेखनीय है।[2]

प्रारंभ में गुरुकुलों की अपनी पाठविधि, स्वतंत्र परीक्षाएं व उपाधियां प्रदान करने की विधायें थी, परंतु स्वराज्य के पश्चात् इस दिशा में परिवर्तन आने लगा। क्रियात्मकता तथा सांसारिक आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर आर्य ग्रंथों की तुलना में आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की पढ़ाई को महत्व दिया जाने लगा। उनका पाठ्यक्रम प्रायः सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त शिक्षणालयों के समान निर्मित किया गया। गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल वृंदावन, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आदि गुरुकुलों द्वारा दी जाने वाली उपाधियों को सरकार द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई और साथ ही गुरुकुल संचालकों ने अपने विद्यार्थियों को गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करते हुए सरकारी परीक्षाएं देने की अनुमति प्रदान कर दी।

ऐसी परिस्थितियों के बावजूद ऐसे भी गुरुकुल हैं, जिनकी पाठविधि सरकारी शिक्षालयों के समान है, परंतु विद्यार्थियों के छात्रावासों में ब्रह्मचर्य व पूर्ण अनुशासित जीवन बिताने की पूरी व्यवस्था है। समय की आवश्यकता तथा छात्रों की जीविकोपार्जन की समस्या को दृष्टिगत रखते हुए अनेक गुरूकुलों ने अपनी पाठविधि में परिवर्तन किया, परंतु कुछ गुरुकुल ऐसे भी हैं, जिन्होंने आर्य पाठविधि का अनुसरण करते रहने का निश्चय किया। झज्जर का आर्य गुरुकुल हरियाणा, एटा का आर्य गुरुकुल इस प्रकार के गुरुकुल में प्रमुख स्थान रखते हैं। वर्तमान समय में गुरुकुल की स्थिति निम्नलिखित है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय–गुरुकुल कांगड़ी (सम–विश्वविद्यालय) की स्थापना 4 मार्च, 1902 को स्वामी श्रद्धानंद द्वारा की गई थी, जिसका एकमात्र उद्देश्य प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करना था। जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 1961 ई0 में सम–विश्वविद्यालय के रूप में स्वीकार किया गया। कुछ समय पहले सुप्रीमकोर्ट ने डीम्ड विश्वविद्यालय के साथ विश्वविद्यालय शब्द पर सुनवाई करते हुए, इनका नाम बदलने के लिए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं यूजीसी को आदेशित किया था। अतः शिक्षा मंत्रालय व यूजीसी की ओर से गुरुकुल कांगड़ी विष्वविद्यालय का नाम गुरुकुल विद्यापीठ कर दिया गया है।[3]

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृंदावन–राजा महेंद्र प्रताप जी के सहयोग तथा आर्य समाज की विचारधारा के अनुरूप शिक्षा के विस्तार के लिए सन् 1900 ई0 में गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृंदावन–मथुरा में स्थापित किया गया। स्वामी दर्शनानंद सरस्वती जी गुरुकुल के संस्थापक थे तथा विश्वेश्वर जी प्रथम संस्थापक आचार्य थे।[4] वर्तमान में यूजीसी द्वारा विश्वविद्यालय की स्थिति की स्वीकृति नहीं दी गई है, परंतु इसकी डिग्रियाँ सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

श्रीमद् दयानंद विद्यापीठ झज्जर हरियाणा–गुरुकुल झज्जर में स्थित इस विद्यापीठ द्वारा ऐसा पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है, जो महर्षि दयानंद सरस्वती के शिक्षा विषयक सिद्धांतों तथा पठन–पाठन विधि के साथ अनुकूलता रखता है। अनेक गुरुकुल इस विद्यापीठ के साथ सम्बद्ध है। इस विद्यापीठ की परीक्षाओं तथा उपाधियों को अनेक सरकारी विश्वविद्यालयों तथा सरकारों द्वारा मान्यता प्रदान की गई है।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर–स्वामीदर्शनानंद सरस्वती ने जिन अनेक गुरुकुल की स्थापना की थी, उनमें गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की अपनी विषेशताएं हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के लिए भूमि प्रदान करने वाले सज्जन बाबू सीतारामजी पुलिस के उच्च पद पर कार्यरत थे। इसका प्रमुख संचालन आचार्य गंगाधर ने मई 1960 के अंत में संभाल लिया। ज्वालापुर गुरुकुल महाविद्यालय का मुख्य विभाग 'गुरुकुलीय संस्कृत विभाग' है, जिसमें मुख्यतः संस्कृत साहित्य, संस्कृत व्याकरण, वेदवेदांग तथा दर्शन शास्त्रों की शिक्षा दी जाती है, जो विद्यार्थी इस विभाग में अध्ययन कर दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं, उन्हें 'विद्यारत्न' की उपाधि दी जाती है। जिसे उत्तर प्रदेश बोर्ड ने हाईस्कूल परीक्षा के समक्ष स्वीकार कर लिया है तथा जो विद्यार्थी 12वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं, उन्हें 'विद्यावारिधि' की डिग्री दी जाती है। 'विद्याभास्कर' स्नातक की डिग्री के समकक्ष है।

गुरुकुल सूपा, गुरुकुल सोनगढ़, कन्या गुरुकुल पोरबंदर आदि गुरुकुल सरकारी पाठ्यक्रम को पूर्ण रूपेण स्वीकार कर चुके हैं।

अनेक गुरुकुलों का स्वरूप संस्कृत पाठशालाओं के समान है, जिनमें संस्कृत की प्रथमा, मध्यमा आदि परीक्षाएं कराई जाती है व इनका पाठ्यक्रम संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के सदृश निर्धारित है।

2. दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल व कॉलेज–30 अक्टूबर 1883 को अजमेर में महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपना भौतिक शरीर का परित्याग किया। महर्षि के देहावसान पर जो शोक सभाएं विविध नगरों में आयोजित की गई, उनमें प्रायः सर्वत्र यह विचार प्रकट किया गया कि महर्षि का सच्चा स्मारक एक ऐसी शिक्षण संस्था ही हो सकती है, जिसमें संस्कृत, वेद–वेदांगों की समुचित व्यवस्था और साथ ही आधुनिक ज्ञान विज्ञान की शिक्षा भी प्रदान की जाए। 8 नवंबर 1883 को लाहौर में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उत्साहपूर्वक यह स्वीकार किया गया कि महर्षि के स्मारक के रूप में 'एंग्लो वैदिक स्कूल तथा कॉलेज' की स्थापना की जाए। इस निर्णय के क्रम में 31 जनवरी, 1886 को लाहौर में दयानंद एंगलो वेदिक कॉलेज एंड मैनेजिंग सोसाइटी के संविधान एवं नियमावली को स्वीकार किया गया तथा 1860 सोसाइटी एक्ट–21 के अधीन पंजीकृत कराया गया।[5]

प्रथम 'दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल' लाहौर में 1 जून 1886 को स्थापित किया गया, जो 1889 में दयानंद कॉलेज में परिवर्तित हो गया।[6] इन स्कूलों में निम्नलिखित पाठविधि निर्धारित की गई :

- प्राइमरी विभाग में शिक्षा का माध्यम हिंदी भाषा
- अपर डिपार्टमेंट में अंग्रेजी भाशा शिक्षा का माध्यम

दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालय के प्रथम प्रधानाचार्य लाला हंसराज जी थे। वर्तमान समय में डी0ए0वी0 शिक्षण संस्थाओं की शाखाएं भारत देश के लगभग प्रत्येक जनपद में स्थापित हो जाने के साथ फिजी, मॉरीशस आदि विदेशों में भी यह संस्थाएं स्थापित की गई हैं। कुछ समय पश्चात् आर्य समाज में कुछ विचारों को लेकर मतभेद होगा तथा परंपरागत भारतीय शिक्षा पद्धति से शिक्षा देने के लिए 1902 में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की नींव रखी गई।

3. संस्कृत पाठशाला–महर्षि दयानंद सरस्वती मानव समाज के हित और कल्याण तथा भारतवर्ष की उन्नति के लिए शिक्षा को उचित स्थान प्रदान करते थे तथा भारत की दुर्गति का एक महत्वपूर्ण कारण अविद्या व सत्य शास्त्रों तथा आर्य ग्रन्थों के पठन–पाठन का अभाव मानते थे। इसलिए महर्षि ने अनेक ऐसी पाठशाला और संस्कृत विद्यालयों की स्थापना की, जिनमें आर्य ग्रंथों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया था। सन् 1870 में मिर्जापुर के ब्राह्मण गुरु चरणलाल उपाध्याय के परामर्श पर महर्षि ने एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की, जिसका संपूर्ण खर्च पंडित गुरुचरण उपाध्याय तथा अध्यापन का दायित्व महर्षि के सहपाठी पंडित जुगलकिशोर ने संभाला। इसी वर्ष 1870 में महर्षि ने का सगंज व जलेसर तथा इससे पूर्व फर्रुखाबाद में एक संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। सन् 1873 में महर्षि ने वाराणसी में सत्य शास्त्र पाठशाला के नाम से एक शिक्षण संस्था

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

की स्थापना की।[7]

उपरोक्त सभी शिक्षण संस्थान महर्षि के इस विचार पर आधारित थी कि सत्य सनातन वैदिक धर्म के वास्तविक स्वरूप की पुनर्स्थापना के लिए ऐसे विद्वानों की आवश्यकता है, जिन्हें वेद, वेदांग तथा आर्य ग्रंथों का समुचित ज्ञान हो, परंतु यह पाठशालाएँ देर समय तक कायम नहीं रह सकी। ऐसे सुयोग्य अध्यापकों का उपलब्ध होना कठिन था, जो पौराणिक व रूढ़िवादी संस्कारों और परंपराओं से मुक्त हो तथा महर्षि द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों में आस्था रखते हों अतः अनेक पाठशालाओं को महर्षि ने स्वयं बंद कर दिया तथा उनके धन को वेदभाश्स प्रकाशन में लगाया।

वर्तमान में ऐसे संस्कृत पाठशाला उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा आदि प्रांतों में विद्यमान है, इनकी कोई पृथक पाठविधि नहीं है। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, लालबहादुर शास्त्री संस्कृत संस्थान दिल्ली, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ आदि द्वारा संस्कृत की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री व आचार्य की परीक्षाएं ली जाती है और इन संस्कृत विद्यालयों में इन्हीं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के अनुरूप अध्ययन अध्यापन होता है और विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण कर शास्त्री, आचार्य की उपाधियां प्राप्त करते हैं।

4. स्त्री शिक्षा के लिए स्थापित शिक्षण संस्थान– बालिकाओं की शिक्षा के लिए आर्य समाज ने अनेक कन्या गुरुकुल स्थापित किए। विविध आर्य प्रतिनिधि सभाओं की विद्या परिषदें व विद्या सभाएं भी कन्या विद्यालय व कॉलेज का संचालन कर रहे हैं।

आर्य समाज अपनी स्थापना के प्रथम दिन से ही महिलाओं की शिक्षा के पक्ष में कार्य कर रहा है, इसी क्रम में कन्या गुरुकुल परिसर देहरादून की स्थापना 1922 में आचार्य रामदेव जी द्वारा महिला शिक्षा के दूसरे परिसर के रूप में की गई थी। स्वामी श्रद्धानंद के ध्येय को साकार रूप देने के लिए 1993 में कन्या गुरुकुल परिसर हरिद्वार की स्थापना की गई।[8]

कन्या महाविद्यालय जालंधर, आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा, आर्य कन्या गुरुकुल देहरादून चिरकाल से स्थापित हैं, जिन में शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्याएँ जहां आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की समुचित शिक्षा प्राप्त कर लेती है वही साथ ही वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति का भी उन्हें उपयुक्त ज्ञान हो जाता है।

5. उपदेशक विद्यालय– सामान्य शिक्षा के लिए आर्य समाज द्वारा बहुत से स्कूल व कॉलेज स्थापित किए गए हैं साथ ही वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार व आर्य समाज के सिद्धांतों को सर्व समाज तक पहुंचाने के उद्देश्य से उपदेशक व पुरोहित तैयार करने के लिए पृथक विद्यालय खोले गए। इसी श्रृखला में आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा लाहौर में उपदेशक विद्यालय की स्थापना की गई। इन उपदेशकों को वेदभाष्य व यज्ञ अनुष्ठान तथा संस्कार आदि कराने में निपुण व सदाचरण के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। उपदेशक विद्यालयों की संख्या अधिक नहीं है परंतु आर्य समाज के शिक्षा विषयक कार्यकलाप में उनका विशिष्ट स्थान है।

6. बाल मंदिर– छोटे बच्चों की शिक्षा पर आर्य समाज द्वारा विषेश ध्यान दिया गया। इस क्रम में आर्य समाज द्वारा बच्चों को छोटी उम्र से ही भारतीय संस्कारों से सुसज्जित करने के लिए दयानंद बाल मंदिर, आर्य बाल निकेतन, आर्य पब्लिक स्कूल, शिशु मंदिर, वैदिक नर्सरी स्कूल, मॉडल स्कूल आदि नामों से बहुत ही शिक्षण संस्थाएं स्थापित की गई हैं। गत वर्षों में इन संस्थाओं की संख्या में वृद्धि हुई है जहाँ अत्यंत हीन स्थिति के परिवारों के लोग अपनी संतानों को उत्तम शिक्षा प्रदान करने में सक्षम होते हैं। इन विद्यालयों में बालकों को अंग्रेजी माध्यम व भाषा में पढ़ाई के साथ–साथ रहन–सहन, बोल–चाल व सदाचरण की शिक्षा दी जाती है। बच्चों को प्रार्थना के मंत्र याद कराए जाते हैं, धर्म प्रेम व देशभक्ति की भावना का उनमें संचार किया जाता है और यह प्रयत्न किया जाता है कि बच्चे भविष्य में अच्छे नागरिक बन सकें। इन आर्य व दयानंद मॉडल स्कूलों में सह शिक्षा को अपनाया गया है जहां बालक एवं बालिकाएँ प्रायः एक साथ पढ़ते हैं जो कि दयानंदजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा विषयकमं तव्यों के विरुद्ध है परंतु जिस प्रकार की शिक्षा की मांग है, उसकी उपेक्षा करना भी आर्य समाज के अनेक विचारकों के मत में वांछनीय नहीं है। इन स्कूलों के माध्यम से संभव हो पाता है कि वैदिक धर्म व आर्य समाज के सिद्धांतों के वातावरण में उस प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर सके जो समय व परिस्थिति के कारण जिस की मांग हो।

7. अन्य शिक्षण संस्थान– आर्य समाज द्वारा अनेक इंडस्ट्रियल स्कूल, पॉलिटेक्निक स्कूल, आयुर्वेदिक कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, शिल्पविद्यालय, ललित कला विद्यालय, कन्या व्यायाम महाविद्यालय आदि शिक्षण संस्थान भी स्थापित किए गए हैं। जहां वेदवेदांग तथा प्राचीन आर्य साहित्य के अध्ययन अध्यापन व शोध कार्य संचालित होते हैं।

8. विदेशों में आर्य शिक्षण संस्थान– आर्य समाज के द्वारा भारत में शिक्षण संस्थानों की स्थापना के साथ–साथ मॉरीशस, सुरीनाम, सिंगापुर, संयुक्तराज्य अमेरिका, ग्रेटब्रिटेन, फिजी, म्यांमार, केन्या, तंजानिया, गायना, त्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका, युगांडा, मोजांम्बिक आदि विदेशी राज्यों में भी पाठशालाओं, विद्यालयों तथा कॉलेजों को स्थापित किया गया है। इनमें

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

आर्य भाषा (हिंदी) तथा वैदिक धर्म के मूलतत्व की शिक्षा दी जाती है जिसके कारण विदेशी व विधर्मी वातावरण में रहते हुए भी आर्य बालक बालिकाओं को अपनी सांस्कृतिक परंपरा से परिचित होने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान वस्तुतः अत्यंत विस्तृत है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होग कि जिस प्रकार भारत की शिक्षा व्यवस्था पर अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक कुठारा घात क्यों न किए गए हैं, परंतु वर्तमान में नवशिक्षित वर्गों में अपने धर्म एवं संस्कृति के प्रति जो आस्था कायम रह सकी है, उसमें महत्वपूर्ण योगदान आर्य–समाज द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाओं की समन्वित विकास की अवधारणा रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विद्वालंकार, डॉ0 सत्यकेतु : आर्य समाज का इतिहास, पृष्ठ 113.
2. आर्य, मनमोहन : आर्य समाज व गुरूकुल।
3. Amarujala.com14nov2018; अमर उजाला, हरिद्वार।
4. Aryabhajan, site 123.me : मनमोहन कुमार आर्य
5. devlokhisarai.com.
6. शुक्ल, प्रो0 रामलखन; आधुनिक भारत का इतिहास।
7. मुखोपाध्याय, देवेन्द्र नाथ; दयानन्द चरित, पृष्ठ .
8. gkv.ac.in/about-us.

*****